RNI : UPMUL00620/24/1/2014-TC

ISSN : 2394-4366

अभिनव गवेषणा

(क्वाटरली इण्टरनेशनल रेफ्रीड रिसर्च जनरल)

संरक्षक मण्डल

मानवेन्द्र स्वरूप (एडवोकेट), सचिव - दयानन्द शिक्षण संस्थान, कानपुर

रघुनन्दन सिंह भदौरिया (विधायक, छावनी-कानपुर), **डॉ. राम शरण श्रीवास्तव** (पूर्व आई. ए. एस.)

प्रधान सम्पादक **डॉ. शिव बालक द्विवेदी**

सम्पादक **डॉ. रश्मि चतुर्वेदी**

एसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी), महिला महाविद्यालय पी. जी. कालेज, किदवई नगर, कानपुर (उत्तर प्रदेश)

सम्मान एवं पुरस्कार - हिन्दी अकादमी दिल्ली तथा भारतीय दलित साहित्य अकादमी दिल्ली, नेशनल एण्ड इण्टरनेशनल कम्पेनडियम नई दिल्ली द्वारा सम्मानित, कालिदास अकादमी दिल्ली द्वारा 'विद्योत्तमा' (मानदोपाधि) सम्मान, अखिल भारतीय संस्कृत प्रचारिणी समिति, कानपुर द्वारा 'हिन्दी वाचस्पति' सम्मानोपाधि, उत्तर प्रदेश के राज्यपाल माननीय श्री रामनाईक जी द्वारा 'प्रज्ञा भारती' मानदोपाधि सम्मान।

लेखन एवं सम्पादन - दलित चिन्तन एवं लेखन, हिन्दी काव्य, कहानी, नाटक, व्यंग्य-लेख तथा अनेक साहित्यिक, सामाजिक, समीक्षापरक लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित, व्याख्यापरक 7 पुस्तकें प्रकाशित। 'वार्षिक पत्रिका' महिला महाविद्यालय, 'श्रृंखला' (ए मल्टी डिस्पलनरी इण्टरनेशनल जर्नल) तथा 'दि गुँजन' त्रैमासिक अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका के सम्पादक मण्डल में। **सदस्य** - मध्य प्रदेश दलित साहित्य अकादमी उज्जैन, मध्य प्रदेश लेखक संघ भोपाल, प्रगतिशील लेखक संघ, कानपुर। 'सक्षम' राष्ट्रीय संगठन, नागपुर, बाल गरीब व अनाथ सेवा समिति उत्तर प्रदेश, अखिल भारतीय कवयित्री सम्मेलन। **निवास एवं सम्पर्क** - सी-2/27 जी, गुलमोहर विहार, नौबस्ता, कानपुर (उत्तर प्रदेश) मो.- 08004516668, 7565857808, **E-mail : rashmi1968smailbox@rediff.com**

सम्पादक मण्डल

● **Dr. Jai Prakash Bharadwaj Prof. Hindi Language & Literature, University of Rome La Sopienza, P. Le. Aldo Moro, Rome,** ● **Dr. Veena Sharma H. O. D. Curriculum Development Hindi Society, Singhapore,** ● **Dr. Tanuja Pudarvth Bee Harry Head of Dept.-Hindi (RTSS) Mauritius,** ● **Dr. Alok Kumar (Principal) Chinmaya Degree College, Haridwar (UK)** ● **प्राचार्य हनुमन्त रणखांब** कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, शिरूर (कासार) जिला- बीड (महा.) ● **डॉ. जी. एल. श्रीवास्तव** (प्राचार्य) आरमापुर पी. जी. कालेज, कानपुर (उ. प्र.), ● **डॉ. स्वदेश श्रीवास्तव** (प्राचार्य) हरसहाय पी. जी. कालेज, पी रोड, कानपुर (उ. प्र.), ● **डॉ. मीता जमाल** (प्राचार्या) दयानन्द गर्ल्स पी. जी. कालेज, कानपुर (उ. प्र.), ● **डॉ. इन्दु यादव** (प्राचार्या) महिला महाविद्यालय पी. जी. कालेज, किदवई नगर, कानपुर (उ. प्र.), ● **डॉ. नूतन वोहरा** (प्राचार्या) ए. एन. डी. कालेज, हर्ष नगर, कानपुर (उ. प्र.), ● **डॉ. शालिनी मिश्रा** (प्राचार्या) ज्वालादेवी पी. जी. कालेज, कानपुर (उ. प्र.)

हिन्दी -

डॉ. अलका द्विवेदी, जुहारी देवी पी. जी. कालेज, कानपुर
डॉ. अनुपमा त्रिपाठी डी.बी.एस. (पी.जी.) कॉलेज, देहरादून
डॉ. इन्द्रदेव आर सिंह श्रीमती आर पी भालोडिया महिला कालेज, कोलकी रोड, उपलेटा, राजकोट (गुज)
डॉ. पुष्पा खण्डूरी डी.ए.वी. (पी.जी.) कॉलेज, देहरादून
डॉ. रेखा उपाध्याय डी.ए.वी. (पी.जी.) कॉलेज, देहरादून
डॉ. आशा वर्मा डी.बी.एस. (पी.जी.) कॉलेज, कानपुर

अंग्रेजी -

डॉ. रश्मि सिंह विभागाध्यक्षा ए. एन. डी. कालेज कानपुर
डॉ. नीता कुलश्रेष्ठ श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय, अलीगढ़ (उ.प्र.)
डॉ. मंजू तिवारी डी. ए. वी. कालेज, कानपुर (उ.प्र.)
डॉ. सुचित्रा मिश्रा महिला महाविद्यालय, कानपुर (उ.प्र.)
डॉ. निवेदिता टण्डन डी. जी. (पी. जी.) कालेज, कानपुर

संस्कृत-

डॉ. सविता भट्ट डी.ए.वी.(पीजी) कॉलेज, देहरादून (उत्तरा.)

डॉ.प्रदीपकुमार दीक्षित अकबरपुर महा., अकबरपुर, कानपुर
डॉ. अर्चना श्रीवास्तव महिला महाविद्यालय, कानपुर
डॉ. आशारानी पाण्डेय डी जी. (पी.जी.) कालेज, कानपुर
डॉ. शक्ति पाण्डेय डी जी. (पी.जी.) कालेज, कानपुर

शिक्षाशास्त्र -

डॉ. अरविन्द नारायण मिश्र उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
डॉ. ममता दीक्षित महिला महाविद्यालय, कानपुर (उ.प्र.)
डॉ. शशीरानी अवस्थी डी. जी. (पी. जी.) कालेज, कानपुर
डॉ. बिन्दुमती देवी उत्तरा. संस्कृत वि. वि., हरिद्वार (उत्तरा.)

राजनीतशास्त्र -

डॉ. कपिल बाजपेई डी. ए. वी. कॉलेज, कानपुर
डॉ. अजय सक्सेना डी. ए. वी. (पी.जी.) कालेज, देहरादून
डॉ. पप्पी मिश्रा डी जी. (पी.जी.) कालेज, कानपुर
डॉ. मनोरमा गुप्ता डी. ए. वी. कॉलेज, कानपुर

अर्थशास्त्र -

डॉ. हरीशचन्द्र जोशी कुमाऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल
डॉ. अलका सूरी डी.बी.एस. (पी.जी.) कालेज, देहरादून(उत्तरा.)
डॉ. नरेश कुमार गर्ग एस एम जे एन पीजी कालेज, हरिद्वार
डॉ. पियूष मिश्रा डी. ए. वी. (पी.जी.) कालेज, देहरादून(उत्तरा.)
डॉ. अखिलेश दीक्षित आरमापुर पीजी कालेज, आरमापुर, कानपुर

मनोविज्ञान -

डॉ. सरिता मिश्रा डी. ए. वी. कालेज, कानपुर (उत्तर प्रदेश)
डॉ. नीता गुप्ता डी. ए. वी. (पी.जी.) कालेज, देहरादून(उत्तरा.)
डॉ. मोनिका सहाय एस.एन.सेन. पी.जी. कालेज, कानपुर
डॉ. रश्मि रावत डी. ए. वी. (पी.जी.) कालेज, देहरादून(उत्तरा.)

समाजशास्त्र -

डॉ. सत्यम द्विवेदी डी.ए.वी. (पी.जी.) कालेज, देहरादून (उत्तरा.)
डॉ. मृदुला शुक्ला कानपुर विद्या मंदिर (पीजी) कालेज, कानपुर
डॉ. पारितोष सिंह डी.बी.एस. (पी.जी.) कालेज, देहरादून (उत्तरा.)
डॉ. भावना महिला महाविद्यालय, कानपुर (उ.प्र.)

इतिहास -

डॉ. समर बहादुर सिंह डी. ए. वी. कॉलेज, कानपुर (उ.प्र.)
डॉ. अंजूबाली पाण्डेय डी.बी.एस.(पीजी)कालेज, देहरादून(उत्तरा.)
डॉ. मीरा त्रिपाठी महिला महाविद्यालय, कानपुर (उ.प्र.)
डॉ. अर्चना शुक्ला एम.के.पी.(पीजी)कालेज, देहरादून (उत्तरा.)
श्रीमती सुमन शुक्ला गवर्नमेन्टगर्ल्स डिग्रीकालेज, बांगर-कन्नौज

रसायन विज्ञान -

डॉ. एस.एन.राम विभागाध्यक्ष जनता कालेज बकेवर, इटावा
डॉ. अर्चना पाण्डेय ब्रह्मानन्द डिग्री कॉलेज, कानपुर
डॉ. दिव्य ज्योति मिश्र जनता कालेज बकेवर, इटावा

भौतिक विज्ञान, वनस्पति विज्ञान-

डॉ. ए. के. अग्निहोत्री ब्रह्मानन्द डिग्री कॉलेज, कानपुर
डॉ. प्रकाश दुबे जनता कालेज बकेवर इटावा
डॉ. जे. पी. शुक्ला डी .बी. एस. (पी.जी.) कालेज, कानपुर

वाणिज्य -

डॉ. ब्रजेश उपाध्याय महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, सतना (मध्य प्रदेश)
डॉ. प्रदीप कुमार त्रिपाठी डी. ए. वी. कालेज, कानपुर
डॉ. सुनीलकुमार बत्रा एस.एम.जे.एन.कालेज,हरिद्वार (उत्तरा.)
श्री योगेश शुक्ला जनता कालेज, बकेवर, इटावा (उ. प्र.)

भूगोल-

प्रकाशचन्द्र सान्याल डीएसबी कैम्पस कुमायूँयूनि., नैनीताल (उत्तरा.)
ऋचा त्रिपाठी पी. पी. एन. कालेज, कानपुर
प्रमोद कुमार सिंह गुरू अंगद देव महाविद्यालय, बाजपुर, कुमायूँ यूनिवर्सिटी, उत्तराखण्ड

चित्रकला -

डॉ. राजकिशोरी सिंह ए. एन. डी. कॉलेज, कानपुर (उ.प्र.)
डॉ. वन्दना शर्मा महिला महाविद्यालय पीजी कालेज, कानपुर

संगीत एवं वादन -

डॉ. निष्ठा शर्मा महिला महाविद्यालय, कानपुर (उ. प्र.)
डॉ. सुनीता द्विवेदी जुहारीदेवी डिग्री कालेज, कानपुर (उ.प्र.)

पुस्तकालय विभाग -

डॉ. आलोक श्रीवास्तव डी.बी.एस. पी.जी. कॉलेज, कानपुर
डॉ. पंकज वर्मा श्री वार्ष्णेय पी.जी. कॉलेज, अलीगढ़ (उ. प्र.)

प्रबन्ध सम्पादक एवं प्रकाशक
सर्वेश तिवारी 'राजन'

सभी संपादकीय दायित्व पूर्णत: अवैतनिक हैं।

नोट- प्रकाशित आलेखों के विचारों से सम्पादक व प्रकाशक की सहमति अनिवार्य नहीं है। समस्त वाद का क्षेत्र कानपुर होगा।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं प्रबन्ध सम्पादक सर्वेश तिवारी `राजन'** द्वारा **पूजा प्रिन्टर्स** हमीरपुर रोड, नौबस्ता, कानपुर-22 से मुद्रित एवं **सुपर प्रकाशन** के-444 `शिवराम कृपा', विश्व बैंक बर्रा, कानपुर-208027 से प्रकाशित सम्पादक- **डॉ. रश्मि चतुर्वेदी मो.- 08004516668 **सम्पर्क** - मो.- 08896244776, 09335597658,
E-mail: super.prakashan@gmail.com, Website : www.superprakashan.com

संपादकीय

कौन कहता है कि हिन्दी अशुद्ध हो गई है? बाजारू, सस्ती और घटिया हो गई है। अपनी अस्मिता के गौरव को भूल गई है। अपनी राह से भटक गई है। अपनी मूल जड़ों से कट गई है। या दिग्भ्रमित हो चली है। नहीं मित्रो, नए शब्दों के पंख लगाकर हिन्दी 'साइबर स्पेस' के संजाल में उड़ कर भूमण्डलीय हो गई है। जरा इंटरनेटी हो गई है। डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट काम हो गई है। विश्वव्यापी और सर्वग्राही हो रही है। इसमें गुडमार्निंग, सलाम, नमस्ते, सतश्री अकाल, वड़क्कम सब कुछ एक साथ मिलता है। आप भले ही इसे भाषा की अशुद्धता का नाम दें या फिर 'कॉकटेली' हिन्दी कहें लिबरल, सोफ्ट या ग्लोबल हिन्दी, चाहें कुछ भी कहें लेकिन हिन्दी नए क्षितिज की ओर विकासोन्मुख हो विश्व पटल पर अपना नाम अंकित कर रही है।

आज समय की माँग है- हिन्दी मार्केट की डिमांड है- हिन्दी मुनाफे की भाषा है- हिन्दी इसे किसी शुद्धता के मानकों की कसौटी में न कसिए। भाषा नदी के प्रवाह की तरह अपने आप रपटती, फिसलती, तैरती अपने मार्ग को स्वयं प्रशस्त कर लेती है। 'नमामिः गंगे' की तरह तमाम अशुद्धता को समेटने के बावजूद अपनी व्यापकता, विश्वग्रहता, सार्वजनीन हो कालजयी बनकर युगतारिणी हो जाती है अपने मानकों को स्वयं गढ़ती है, आज इसी ओर अग्रसर है हिन्दी। दसवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन भोपाल में इस दृढ़ संकल्प के साथ समाप्त हुआ कि 'नई सहस्त्राब्दि में हिन्दी को विश्व भाषा बनाना है'। वर्तमान इक्कीसवीं सदी के उत्तर आधुनिक इंटरनेट युग में हिन्दी की नई चाल इसी चुनौती को स्वीकार कर मूर्त रूप प्रदान कर रही है, जिसके पीछे संचार माध्यमों और हिन्दी पत्रकारिता की महत्ती भूमिका है।

जनतंत्र में मीडिया 'फोर्थ स्टेट' के रूप में विद्यमान होता है। वर्तमान सूचना क्रान्ति के इस 'साइबर' दौर में, मीडिया ने अपने संचार माध्यमों के साथ विश्व पटल पर नई इबारत लिखी है। विश्व के कोने-कोने में आज हिन्दी देखी, पढ़ी और लिखी जा रही है। सूचना, शिक्षा, मनोरंजन और रोजगार को प्रदान करने वाले पुरोधा के रूप में मीडिया उभरकर हमारे सामने खड़ा है। हिन्दी पत्रकारिता हो या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, फिल्म, कम्प्यूटर या टी.वी. चैनल्स हर क्षेत्र में हिन्दी आज अपने को स्थापित कर चुकी है। देश के सर्वाधिक प्रसार संख्या वाले अखबारों की सूची में पहले तीन स्थानों पर हिन्दी के अखबारों की गूँज है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में हिन्दी और दूसरे भारतीय भाषा के चैनलों ने, अंग्रेजी को लगभग देश निकाला दे दिया है। विज्ञापन बाजार की कैमिस्ट्री ने बड़ी-बड़ी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को हिन्दी में विज्ञापन के लिए नतमस्तक किया है। देश-दुनिया का हाल जानने के लिए 'गूगल समाचार' अब हिन्दी में उपलब्ध है। किसी अखबार के किस पोर्टल में कौन-सी खबर है, इसे आप तुरन्त जान सकते हैं। ज्ञान-विज्ञान के सबसे बड़े विश्वकोश 'विकीपीडिया' अब इंटरनेट हिन्दी में उपलब्ध है।

हिन्दी को विश्व-व्यापी बनाने में जो कार्य हमारे देश की शासननीति, शिक्षण संस्थान, आयोग, सप्ताह, दिन और पखवाड़े मनाने वाले जो काम नहीं कर सके उसे वर्तमान की पत्रकारिता ने सम्भव बना दिया। इन्ही संचार माध्यमों की भाषा ने देश के अन्दर हिन्दी को लेकर चल रहे उत्तर-दक्षिण के विरोधों को कम किया है। मीडिया की क्षमता ने ही हिन्दी को विश्वजनीन बना दिया है। आज पत्रकारिता का हिन्दी को व्यापक बनाने में सराहनीय योगदान है।

वर्तमान समय में हिन्दी पत्रकारिता पर यह आरोप लगाया जा रहा है कि उसने हिन्दी भाषा कि शुद्धता पर चोट की है। पत्रकारिता ने हिन्दी के शब्दों को तोड़-मरोड़ दिया है। यानि हिन्दी भाषा अपने विकृत रूप में उभर रही है। दरअसल वर्तमान युग जिसमें हम-आप जीवित हैं उत्तर आधुनिकता का युग है। इसमें डेरिन्डा का डमरू 'विखण्डनवाद' का भाषाई नाद रहा है, जिसे फ्रेडरिक जेमेसन 'लेट कैपटिलिज्म' वृद्ध पूंजीवाद कहते हैं और फ्रान्सीसी 'ल्योटार्ड' महान वृतान्तो के अन्त की चर्चा करते हैं, जब कि 'ज्यां बोड्रिलार्ड' इसे 'डिजनीलैण्ड' समाज कहते हैं। कुल मिलाकर एक ऐसा संक्रमणकालीन दौर जिसमें सब कुछ 'फ्यूजन' है। गीत, संगीत, कला, दर्शन, राजनीति, फैशन, खान-पान सब कुछ। ऐसे में पत्रकारिता भी इससे कैसे अछूती रह सकती है?

वर्तमान पत्रकारिता (मीडिया) के तेवरों में भी परिवर्तन आया है। अब हिन्दी पत्रकारिता ज्यादा सनसनीखेज हो गई है। उस पर भी बाजारवाद का दबाव है। मुनाफे की भाषा रोचक होनी चाहिए। स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय कलम से 'क्रान्ति' थी, अब 'बाजार' है। पत्रकारिता 'मिशन से प्रोफेशन' में ढल चुकी है, जो दिखता वो बिकता है, अब पत्रकार 'राइटर्स विदाउट्स पेन' हो चुका है। हिन्दी पत्रकारिता अब स्मार्ट हो चली है। अब चोटी, धोती, तिलकधारी भाषा पत्रकारिता की नहीं है। अब हिन्दी पत्रकारिता जीन्स पहन कर मॉडर्न मैट्रो, ऑनलाईन वाली फेसबुक वाली, मोबाइली-मैसेज वाली हो गई है, वह अपने 'ट्वीट' की तेज 'बीट' से सबको 'चीट' कर रही है।

फ्रांसीसी समाजशास्त्री 'इमाइल दुर्खीम' ने समाज को देवता कहा है। व्यक्ति पर समाज का दबाव होता है, जैसा समाज होगा वैसा ही साहित्य होगा। पत्रकारिता की भाषा भी इसी सामाजिक सरोकारों से जुड़ती और परिवेश को ग्रहण करती है। बदलते समाजों के साथ पत्रकारिता की भाषा भी बदल जाया करती हैं, क्योंकि सन्दर्भ बदल जाया करते हैं। नई चीजों के साथ नई भाषा भी अनिवार्य होती है। विभिन्न समाजों में जो आज हिंसा, अपराध आतंकवाद की प्रवृत्ति व घटनाएँ बढ़ रही हैं, उसको प्रसारित करने की शब्दावली भी बहुत बदल गई है। पत्रकारिता का कार्य जन-जन को जागरुक करना है, जिसके लिए सहज, सरल सुबोधगम्य भाषा होनी चाहिये जो आम जन तक पहुँच सके। इस अर्थ में भाषा तो गढ़नी ही होगी, जिस धर्म को हिन्दी पत्रकारिता ने बाखूबी निभाया है।

हिन्दी भाषा की क्लिष्टता को सरल, सहज कर परोसना उसकी शुद्धता से खिलवाड़ नहीं है, उसी पवित्रता पर कोई आंच भी नहीं है, बल्कि उसकी अर्थवत्ता की व्यापकता का सूचक है। जनमानस तक अपनी बात पहुँचाने की सरल शैली ही पत्रकारिता की कला है। मेरे अनुसार जब-जब नई पीढ़ी लेखन के लिए सामने आएगी, भाषा में अपने समय के अनुरूप परिवर्तन लाएगी। भाषा में परिवर्तन शाश्वत है और उसकी समृद्धि के लिए परिवर्तन होना अनिवार्य भी है। आज विश्व पटल पर हिन्दी की पहचान इसी का परिणाम है। कबीरदास कहते हैं कि 'साधो सहज समाधि भलि' हिन्दी भाषा की किलष्टता से मुक्ति ही मीडिया की सबसे बड़ी देन है, जो समझ में आए वह हिन्दी, जो देश की एकता अखण्डता के लिए सबको जोड़ सके वह है, पत्रकारिता की हिन्दी। राष्ट्र को समर्पित हिन्दी, राष्ट्रभाषा हिन्दी।

रूसी राष्ट्रपति 'गौर्वाचोव' ने 'ग्लासनो स' और 'पेरिसत्रोड़का' शब्द का अपने सिद्धान्त रूप में प्रसार किया था, जिसका अर्थ खुली खिड़की यानी विचारों का आदान-प्रदान (ग्लासनो स) तथा पुनर्निमाण (पेरिसत्रोड़का) है। यही सिद्धान्त आज हिन्दी भाषा के सन्दर्भ में पत्रकारिता परिपूर्ण करती है, यानि खुले मन से भाषा का पुनर्निर्माण।

21वीं सदी के सबसे युवा देश के रूप में नेतृत्व करने वाला भारत, विश्व में सर्वाधिक तृतीय भाषा के रूप में बोली जाने वाली अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी के गौरव से ओत-प्रोत है। हिन्दी पत्रकारिता के इस नए कौशल ने भाषा की सभी सीमाओं को लाँघ कर, दूरियाँ मिटा कर सात समुन्दर पार से विजयी जयघोष करते हिए सम्पूर्ण विश्व को एक ग्राम्य में बदल दिया है, यही है भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र 'वसुधैव कुटुम्बकम'। इसे रोको मत, टोको मत, बस बढ़ने दो।

रश्मि चतुर्वेदी

- **डॉ. रश्मि चतुर्वेदी** (सम्पादक)

RNI : UPMUL00620/24/1/2014-TC ISSN : 2394-4366

अनुक्रम

सम्पादक मण्डल, सम्पादकीय

बद्री विशाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फर्रुखाबाद (उ. प्र.) के पूर्व प्राचार्य एवं **प्रधान संपादक - डॉ. शिवबालक द्विवेदी** कार्यालय में (छाया चित्र प्रथम)

महिला महाविद्यालय किदवई नगर, कानपुर (उ. प्र.) के एसोसिएट प्रोफेसर-हिन्दी विभाग एवं **यशस्वी संपादक - डॉ. रश्मि चतुर्वेदी** (छाया चित्र द्वितीय)

1- **विद्रोही भक्त- कवियत्री मीरा (गुजराती-हिन्दी रचनाओं के संदर्भ में)** 07
- डॉ. जशुपुरी भगवानपुरी गोस्वामी

2- **लोककल्याणस्य मूलं संस्कृत वाङ्मयं एकानुशीलनं** 12
- डॉ. ए. के. सिन्हा

3- बौद्ध धर्म और हिन्दी दलित साहित्य – संगम वर्मा 15

4. गॉधी के देश में असहिष्णुता – डॉ. अर्चना गुप्ता 19

5. भक्तियुगीन साहित्य और बौद्ध दर्शन – रमेश कुमार 22

6. **'भारतीय चिन्तन परम्परा में सामाजिक आर्थिक व राजनैतिक न्याय की व्याख्याएँ'** 26
- डॉ. पप्पी मिश्रा

7- सल्तनत कालीन कृषि अर्थव्यवस्था (1206 से 1320 ई0) 31
– डॉ. राजीव प्रताप सिंह

8. **दलित साहित्य का स्वरूप: कथ्य और शिल्प** - श्री एन. पी. बारैया 34

9- लेखक और कला समीक्षक – डॉ. वन्दना शर्मा 36

10- **निर्गुण भक्त : कबीर एवं जायसी की भक्त साधना - एक तुलनात्मक अध्ययन** 40
- डॉ. आर. बी. वाणीश्री

11- **पर्यावरण संरक्षण में शिक्षा की भूमिका** - डॉ. साधना पाण्डेय 45

12- **'आदिवासी लोकजीवन में लोकनृ य का स्थान'** 50
- प्रा. डॉ. जयश्री गावित

13- **नागार्जुन के काव्य में जन संघर्ष** - डॉ. सुमन सिंह 52

14- **मानव संस्कृति का पर्यावरण पर संतुलन बनाये रखने की कोशिश : एक अध्ययन** 55
- दुर्गेश शुक्ला, डॉ. पूनम बाजपेयी

15- **वर्तमान वैश्विक सन्दर्भ में भारत** - डॉ. कपिल बाजपेई 60

16- **'रामायणाश्रित खण्डकाव्यों की प्रासंगिकता'** - डॉ. एन. टी. गामीत 63

17- **स्त्री लेखन कल और आज** - डॉ. संध्या मिश्रा 67

18- **महर्षि वाल्मीकि की दृष्टि में नारी** - डॉ. ममता पाण्डेय, डॉ. विनोद कुमार पाण्डेय 70

19- **जयशंकर प्रसाद के काव्य में अभिव्यक्ति सौन्दर्य भावना** 74
- अर्चना वर्मा, डॉ. रानी अग्रवाल

20-	आदिवासियों के सामाजिक यथार्थ का दस्तावेज : 'जंगल जहाँ शुरू होता है'	- प्रा. श्रीमंत जगन्नाथ गुंड	77
21-	विश्व संस्कृति के उन्नयन में भारतीय साहित्य की भूमिका	- सुप्रिया तिवारी	81
22-	आधुनिक युग में असुरक्षित होते बुजुर्ग - कारण और निवारण	- सुनीता जायसवाल	84
23-	रामकथा–आश्रित खण्डकाव्यों में युग चेतना–बोध	– अशमिन्दर कौर	88
24-	**Rethinking Globalization:Indian English Fiction and the Cultural Packaging**	- Dr.Anupam Shukla	88
25-	**Green Marketing : New Hopes for Future**	- Dr. Deepshikha Chaturvedi	92
26-	**Open and Distance learning : Issues and Startegies**	- Neha Mishra, - Dr. Anil Kumar Panda	101
27-	**China's Policy and India**	- Dr. Atul Mishra	107
28-	**R.K. Narayan As An Indo-Anglian Novelist**	- Dr. Archana Mishra	113
29-	**Empowerment of Women and Government : Indian Context**	- Sushma Nishad	118
30-	**Feminist Consciousness in South Asian Women Writers**	- Alka Saxena	121
31	**Empowerment of Indian Rural Women still Miles to go**	- Dr. Hemlata Sanguri, Dr. Seema Nigam	125
32	**Effects of Food Beliefs on Health**	- Vinita Tomer	129
33-	**Dalit Feminism : Voice of Protest**	- Dr. Manju Tewari	138
34-	**Culture and Anarchy in Chinuaachebe's things Fallapart**	- Dr. Sanjay Sharma, - Dr. V.S. Shukla	141
35-	**User Education : Need and Importance in Academic Library**	- Smt. Meena Srivastava	143
36-	**Rabindranath Tagore as a ``Nationalist Poet'' or a ``Nationalist Leader''**	- Dr. Sarika Bajpai	146
37-	**The Struggle for Racialand Gender Equality**	- Dr. Suman Gupta	151
38-	**A Study of Human Conflict in Arthur Miller's Plays**	- Dr. Anil Kumar Tripathi, Dr. C.P. Singh	154
39–	कबीर का रहस्यवाद	– डॉ. दीप्तिरंजन बिसारिया	158